हमारी बात

भारत भवन की तीसरी वर्षगाँठ पर रंगमण्डल अपने अस्तित्व के चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पिछले तीन वर्षों में रंगमण्डल ने जो कुछ भी विनम्रता पूर्वक किया है वह भारतीय रंगमंच मे एकदम दूसरा तरीका है, जिसके महत्व को समय और इतिहास आँकेगा। हम एक बेचैन खोज से गुज़र रहे हैं। एक बिलकुल नये मुहावरे की खोज, जो आधुनिकता और समकालीनता को भारतीय अर्थों में परिभाषित कर सके। एक ऐसा रंगमंच जो अभी देखा नहीं गया और हम भी उसे नहीं जानते सिर्फ खोज रहे हैं। इसलिये यात्रा रूकी नहीं है। इसी निरंतरता में रियाज और नाटकों के प्रदर्शन, दोनों चल रहे हैं।

पिछले लगभग ४ सालों में रंगमण्डल ने २७ सफल असफल नाटक तैयार किये जिनके कुल मिलाकर लगभग ३६५ प्रदर्शन बस्तर की तहसीलों से लेकर कलकत्ता, इलाहाबाद, दिल्ली तक हुए हैं। दर्शक की तलाश और दर्शक द्वारा नाटक की निरंतरता की तलाश में हम सिर्फ इतना योग कर पाये हैं कि भोपाल में दर्शकों की संख्या बढ़ी है, जिसका उदाहरण है १९८४ का ग्रीष्म कालीन रंगोत्सव। यह रंगोत्सव संभवतः हिन्दी रंगमंच में अब तक का सबसे बड़ा आयोजन था जिसमें १२ भाषाओं के १८ नाटकों के ५४ प्रदर्शन १० निर्देशकों के निर्देशन में १० मई ८४ से २४ जून ८४ तक निरंतर हुए। और दर्शकों का टोटा नहीं रहा। इस तरह से जो भी छोटा-मोटा इतिहास हम बना रहें हैं उसमें हिन्दी के नये दर्शक का बड़ा योग है। और चूँकि सालों बाद इस दर्शक को एक निरंतरता वाला रंगमंच मिला है इसलिये लगातार प्रदर्शन हमारी प्रतिबद्धता है।

इस बार के उत्सव में रंगमण्डल के साथ-साथ कलकत्ता की **शताब्दी** भी **बादल सरकार** के निर्देशन में अपने नाटक प्रस्तुत कर रही है। बादल सरकार और शताब्दी की शैली रंगमंच का एक नया विचार है जो भोपाल के दर्शकों के लिए एकदम नया अनुभव होगा।

एक और कल्पना को भी ठोस रूप हम दे पाये हैं, वह यह है-**रंगदर्शनी**। इस बार यह **पोस्टरों** पर केंद्रित है जिसे प्रसिद्ध रंगकर्मी **बंसी कौल ने डिज़ाइन किया है। पोस्टर प्रदर्शनी में दुनिया भर के नाटकों व अन्य कार्यक्रमों के पोस्टरों के साथ भारत भवन में तैयार किए गए पोस्टर भी हैं। इस पुस्तिका में पोस्टर की कला पर एस. ए. कृष्णन** की एक टिप्पणी है जो हमारे लिए एक अच्छी चुनौती है। इस उत्सव की एक और बड़ी घटना है महान् **शेक्सपियर** का नाटक, उसका **रघुवीर सहाय** द्वारा अनुवाद, **फ्रिट्ज़ बेनेविट्ज़** द्वारा निर्देशन, **जगदीश स्वामीनाथन** द्वारा कला निर्देश और चंदोबे पर चित्रांकन तथा **ब. व. कारंत** का संगीत। यानी पाँच दिग्गज एक ही मंच पर। ये सब भारत भवन में संभव हो रहा है।

भोपाल नाट्य उत्सव

भारत भवन के सहयोग से

भोपाल की ग्यारह रंग संस्थाओं की
प्रस्तुतियाँ

24 अगस्त - 6 सितम्बर 1991

रंगमण्डल का आयोजन

भोपाल नाट्य उत्सव

24 अगस्त 91 **दर्पण** : टुसुरफुसना/ लेखक और निर्देशक-इक़बाल मजीद

27 अगस्त 91 **रंगायन** : कोमल गांधार/लेखक- शंकर शेष, निर्देशक-प्रशांत खिरवड़कर

28 अगस्त 91 **दोस्त** : मौत के साये में/लेखक-ज्याँ पाल सार्त्र, निर्देशक-आलोक चटर्जी

29 अगस्त 91 **रंग समूह भारतीय स्टेट बैंक** : सद्गति/ लेखक-मुंशी प्रेमचन्द, निर्देशक-राकेश सेठी

30 अगस्त 91 **पल्लव**:राजदरसन/लेखक-मनोज मित्रा, निर्देशक- इरफ़ान सौरभ

31 अगस्त 91 **समान्तर**: दुहाई लुकमान/लेखक-मौलियर, निर्देशक- नवनीत श्रीवास्तव

1 सितम्बर 91 **एकरंग**: मृत्युंजय/लेखक-शिवाजी सावंत, निर्देशक-जयन्त देशमुख

3 सितम्बर 91 **कारवाँ**: अथ मनुस जगन ह/लेखक-प्रभाकर लक्ष्मण मयेकर, निर्देशक-यदुराज सिंह

4 सितम्बर 91 **भारतीय जन नाट्य संघ**: रक्तबीज/लेखक-शंकर शेष, निर्देशक-शरद शबल

5 सितम्बर 91 **टोली**: बिरजीस कदर का कुनबा/लेखक-लोर्का, निर्देशक-विभा मिश्र

6 सितम्बर 91 **त्रिकर्षि**: नगर वधू/लेखक-प्रतिभा अग्रवाल, निर्देशक- के.जी. त्रिवेदी

प्रतिदिन शाम 7 बजे

भोपाल नाट्य उत्सव भारत भवन की, विशेष रूप से रंगमण्डल की गतिविधियों का एक नया विस्तार है। यह नयापन इस बात में है कि इस उत्सव श्रृंखला के सहारे भारत भवन का रंगमण्डल अपने विस्तार में भोपाल की रंग प्रतिभाओं को समेटने, शामिल करने का उद्यम कर रहा है। यह पूरा उत्सव भोपाल की शौकिया रंगमण्डलियों पर केन्द्रित है। इस बात का अलग से उल्लेख करना जरूरी नहीं है की भारतीय रंगमंच के विकास में व्यावसायिक रंग संस्थाओं ने जितना योगदान किया है उससे कहीं अधिक योगदान उन छोटी-छोटी रंग संस्थाओं का रहा है, जिन्हें शौकिया रंगमंच, अव्यावसायिक रंगमंच या अंग्रेजी में 'एमेच्योर थियेटर' कहा जाता है। रंगमण्डल इन संस्थाओं के मूल्यवान योगदान के प्रति सजग है और इस उत्सव के माध्यम से वह विनम्रतापूर्वक अपनी इसी सजगता का इज़हार कर रहा है।

हमें आशा है कि यह शुरूआत एक ऐसे आन्दोलन का रूप ले सकेगी जो अन्ततः व्यावसायिक और शौकिया रंगमंच के बीच की तथाकथित दीवार को तोड़कर एक समावेशी और साझा रंग सक्रियता लायेगा क्योंकि हम इसमें विश्वास करते हैं कि साधनों की गुणात्मक और मात्रात्मक भिन्नता के बावजूद रंगमंच और उसके दर्शक एक हैं और नाटक का वास्तविक संघर्ष उसके साधनों से परे निर्देशक, अभिनेता और तकनीशियनों की सर्जनात्मक प्रतिबद्धता को तराशने और बनाये रखने में है।

प्राप्त प्रविष्टियों में से नाट्य-उत्सव में प्रस्तुति हेतु नाटकों के चयन के लिए भारत भवन श्री शशांक मुकर्जी, श्री लीलाधर मंडलोई, श्री दिनेश राय, श्री एस.एल. वाल्मीकि, श्री क्रिस्टोफर डेविड, श्री प्रेम गुप्ता, सुश्री हेमलता का अत्यन्त आभारी है।

— दयाप्रकाश सिन्हा

बहु भाषायी नाट्य समारोह

तेलगू डोगरी राजस्थानी संस्कृत बंगला कन्नड़
और हिन्दी के सात नाटक

16 - 22 फरवरी 1992

भारत भवन

की दसवीं वर्षगांठ पर आयोजित

मध्यप्रदेश रंग मंडल

परामर्श समिति

राहुल बारपुते, हबीब तनवीर, नेमिचन्द्र जैन, अलखनन्दन, विशेष सचिव : संस्कृति, नीलम मानसिंह चौधरी, ब. व. कारन्त (निदेशक)

पिछले दस वर्षों के दौरान मध्यप्रदेश में एक नयी और समर्थ रंगचेतना विकसित हुई और प्रदेश के प्रमुख केन्द्रों में रंगकर्म लगभग एक आंदोलन का रूप लेता जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रदेश की अपनी समर्थ लोक शैलियां भी हैं जिनसे नये रंग-आन्दोलन का वैचारिक आदान-प्रदान शुरू हो गया है। इस रंग सक्रियता के कारण प्रदेश भर में नाटक के निश्चित दर्शक समुदाय की रचना हो गई है तथा नाटक देखने की भूख दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है। इस आन्दोलनात्मक स्थिति में मध्यप्रदेश रंगमंडल जैसा केन्द्रीय प्रयत्न एक ऐतिहासिक जरूरत है जिससे अव्यावसायिक नाट्य कर्म द्वारा स्वाभाविक रूप से छोड़े गये रिक्त स्थान की पूर्ति कर रंग-आंदोलन को अनवरत धारा का रूप दिया जा सके। इसीलिए मध्य-प्रदेश रंग मंडल समूचे प्रदेश के रंग आंदोलन का एक अनिवार्य हिस्सा है तथा केन्द्रीय प्रयत्न होने के बावजूद इसकी नियति विकेन्द्रीकरण है। यह भी कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश रंग मंडल समूचे प्रदेश के रंग-आंदोलन का समान-धर्मा संवादी होगा तथा दर्शक और रंगमंच के बीच होने वाले रचनात्मक आदान-प्रदान में अपने को समाहित करेगा। इसके साथ ही इसका उद्देश्य प्रामाणिक उत्साह से भरे हुए रंग-आंदोलन को शिल्प तकनीक की दक्षता से लैस करना भी होगा जिससे शौकिया रंगमंच भी प्रस्तुति के स्तर पर प्रोफेशनल हो सके। यह भी लक्ष्य है रंग मंडल का रूप केवल नाट्य प्रस्तुत करने वाली कम्पनी का न हो बल्कि वह प्रदेश की रंग प्रतिभाओं को संयोजित कर रचनात्मक उत्तेजना पैदा करने की भूमिका भी करे। प्रदेश की हर रंग मंडली से जीवंत संबंध, नाटककारों से संवाद, प्रदेश के निर्देशकों से रचनात्मक आदान-प्रदान तथा अंततप्रदेश के जनजीवन में शिरकत. नाट्यकला और जन-जीवन के बीच गहरा संबंध ही मध्यप्रदेश रंगमंडल का हेतु होगा।

म. प्र. रंगमंडल के लक्ष्यों व कार्यशैली का विवरण नीचे बताये अनुसार अभीष्ट है :—

म. प्र. रंग मंडल का लक्ष्य केवल नाट्य प्रस्तुति नहीं होगा। यह संस्था निरंतर रियाज में विश्वास करती है जिससे इसके सदस्य संपूर्ण रंगानुभव के भागीदार रहें और रंगकर्म में एकदम नये-नये आयामों की तलाश हो सके।

रंग मंडल का लक्ष्य रंग-हलचल नहीं रंग आंदोलन होगा जो पूरे वातावरण से अपने को जोड़ सके। रंग मंडल स्थानीय रंगकर्म और नाट्य शैलियों की समृद्धि तथा विकास में विश्वास करता है जिससे उनकी शक्ति और पहचान बढ़ सके। प्रदेश की प्रमुख चारों बोलियों तथा शैलियों में नाट्योत्सव रंगमंडल की परियोजनाओं में शामिल है।

रंग मंडल यह विश्वास करता है कि रंगमंच की शक्ति उसकी स्थानीयता है; किन्तु उस स्थानीयता में सार्वभौमिक दृष्टि का अभाव किसी भी रचना कर्म को छोटा करता है। रंगमंडल यह मानता है कि हमारे रंगमंच की प्रकृति स्थानीय हो तथा आत्मा भारतीय।

म. प्र. रंगमंडल "स्टैण्डर्ड हिन्दी" के स्थान पर उस हिन्दी में विश्वास करता है जो स्थान-विशेष की बोलियों के संसर्ग में अलग-अलग रूप ग्रहण करती हैं। रंगमंडल यह मानता है कि रंगमंच की प्रकृति स्थानीय होने के कारण भाषा के उक्त रूपों तथा बोलियों का रंगकर्म में महत्वपूर्ण स्थान है।

रंगमंडल किसी निश्चित निर्धारित रंगशाला में बंदी न होकर हर प्रकार की रंग-वस्तु का उपयोग करेगा। इसमें ऐतिहासिक स्थल, पार्क, पहाड़ों की तराई, झील किनारे, आधुनिक इमारतें, रंग-प्रकृति के अनुकूल अन्य स्थान शामिल होंगे।

रंगमंडल रंग-प्रयोगों में विश्वास करता है किन्तु प्रयोग यदि प्रासंगिक न हो तो अविश्वसनीय होते हैं। लोक जीवन में रंगकर्म के प्रति रुचि गहरी करने के लिए जरूरी है कि प्रयोग और जनप्रिय तत्वों का संतुलन रखा जाय।

मध्यप्रदेश रंगमंडल केवल नाट्य प्रदर्शन करने वाला दल नहीं है। इसे अन्ततः एक ऐसी शिक्षण संस्था होना है जहां अभिनेता रंग प्रशिक्षक भी हो सके तथा समूचे प्रदेश में रंग-प्रशिक्षण का अभियान आने वाले वर्षों में सघन रूप से चले।

जन प्रिय रंग–शैलियां और प्रदर्शन शैलियां आज भी रंगमंच के लिए प्रासंगिक हैं जिनका आधुनिक भावबोध के साथ उपयोग के लिए रंगमंडल प्रतिबद्ध है।

रंगकर्म के क्षेत्र में आज भी रसास्वादन, नाट्य इतिहास का ज्ञान तथा आलोचना–सामर्थ्य कमजोर पक्ष हैं। रंगमंडल यह विश्वास करता है कि अभिनय के अतिरिक्त इन तीन गुणों का विकास बहुत जरूरी है।

रंगमंच साहित्य की तरह ग्रंथों में नहीं पाया जा सकता। वह रोज खत्म होता है, रोज जन्म लेता है। यह माध्यम की विशेषता है। पर आसपास के रंगकर्म का साक्ष्य–लेख न होना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके अभाव में इसके इतिहास को नहीं जान सकते। रंगमंडल यह विश्वास करता है कि आसपास हो रहे रंग कर्म का प्रामाणिक साक्ष्य-लेख किया जाए।

म. प्र. रंगमंडल हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्यकारों से जीवंत संपर्क व संवाद करेगा तथा भारतीय व विश्वसाहित्य की मूल्यवान नाट्यकृतियों के हिन्दी में प्रस्तुतीकरण के लिये प्रतिबद्ध होगा। रंगमंच की भाषा वही है जिस भाषा में रंगमंच घटित होता है। भाषा कभी-कभी अपनी होते हुए भी कृति की केन्द्रीय विचार वृत्ति लोक के लिये असंप्रेषणीय हो जाती है. रंग मंडल का लक्ष्य होगा मूल हिन्दी में लिखे गये नाटकों को प्रधानता देने के साथ लोकमत से जुड़ने वाली दूसरी भाषाओं की मौलिक कृतियों तथा महत्वपूर्ण नाट्य लेखन को हिन्दी रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाए।

रंगमंडल भोपाल में तथा भोपाल के बाहर प्रदेश के रंगकर्मियों के साथ रंग शिविर आयोजित करेगा। सुदूर कस्बों में जाकर नाट्य-प्रदर्शन करेगा तथा विभिन्न स्थानों पर नाट्य उत्सवों का आयोजन करेगा।

रंगकर्मियों के लिए रंगमंच के इतिहास की जानकारी भारत के साथ-साथ एशिया व विश्व स्तर पर होनी चाहिए जिससे अपने माध्यम का इतिहास बोध भी रंगकर्मियों को हो सके। इतिहास की ऐसी शिक्षा के लिए रंगमंडल प्रयत्नशील रहेगा।

अन्य कला माध्यमों के साथ रंगकर्म के घनिष्ठ और अन्तर्निर्भर संबंधों को रंगमंडल प्रत्यक्ष और गहरा करने की अनवरत चेष्टा करेगा।